

अपना खेत तालाब अभियान

सहयोग-सहयोग केयर फार यू नई दिल्ली

प्रेरक संस्था-नैना सांस्कृतिक विकास प्रशिक्षण
संस्थान अतर्रा(बुन्देलखण्ड)



श्रमदान आधारित काम के बदले, अनाज दान कार्यक्रम



अपना तालाब अभियान का उद्देश्य

- बुन्देलखण्ड के सर्वाधिक जल संकट ग्रस्त क्षेत्रीय किसानों की कृषि भूमि को सिंचित करना ।
- वर्षा जल संचयन के साथ —साथ भूगर्भ जल सन्तुलन बनाने हेतु प्रयास करना ।
- कृषि आधारित आजीविका को पुर्नजीवित करना ।
- राज और समाज के बीच अवरुद्ध गतिशीलता को पुर्नसंचालित कर कम लागत में सिंचाई जलस्रोतों का टिकाऊ निर्माण एवं प्रबन्धन ।
- अपना तालाब के माध्यम से किसानों को जल स्वावलम्बन की साझी पहल करना ।

अपना तालाब अभियान की आवश्यकता क्यों

- बुन्देलखण्ड क्षेत्र विशेषकर जनपद बौदा में तेजी से घटता भूगर्भ जल स्तर
- क्षेत्र में विगत कई वर्षों से सूखे एवं प्राकृतिक आपदाओं का चक्र
- बौदा जनपद के तिदवारी ब्लॉक डार्कजोन एरिया घोषित तथा नरैनी एवं बबेरू ब्लॉक डार्क जोन की स्थिति में ।
- प्राचीन एवं पारम्परिक जलस्रोतों के दोहन के साथ उनके रखरखाव का अभाव तथा उन पर बढ़ते अवैध कब्जे ।
- अनियमित वर्षा तथा जलवायु परिवर्तन ।
- सरकार द्वारा बनायी गयीं किसान विरोधी जल नीतियां ।
- विदेशी कम्पनियों द्वारा जल स्रोतों पर अप्रत्यक्ष रूप से कब्जा करने की मंशा/रणनीति ।
- पानी/सिंचाई के अभाव, बढ़ती लागत एवं उत्पादन में कमी से खेती में किसानों को निरन्तर घाटा तथा किसानों पर बढ़ता कर्ज ।
- कृषकों द्वारा खेती करना छोड़कर आजीविका हेतु पलायन
- किसानों द्वारा जारी आत्महत्याएं ।

लगातार सूखे के कारण घटता भूगर्भ जल स्तर एवं सूखे जल स्रोत



पेयजल का भीषण संकट



कुएं सूखे जलाशय सूखे



उ०प्र० के बुन्देलखण्ड इलाके के ग्राम रिसौरा में खेत तालाब बनाने की रणनीति तैयार करते हुये सहयोग केयर फार यू नई दिल्ली के निदेशक शेखर महाजन एवं नैना संस्थान अतर्रा के निदेशक अरविन्द शा



अपना तालाब कैसे बनायें (10प्रतिशत मॉडल)

सिंचाई हेतु पानी के मात्रा की गणना

● गेहूँ की 1 एकड़ फसल हेतु पानी की जरूरत

4 सिंचाई 5 से.मी. पानी प्रति सिंचाई = $4000X (5X4 \div 100) =$
800 घन मीटर पानी (1 घन मी० = 1000 ली० अर्थात 800000 ली०)

● चना की 1 एकड़ फसल हेतु पानी की जरूरत

2 सिंचाई 5 से.मी. पानी प्रति सिंचाई = $4000X (5X2 \div 100) =$
400 घन मीटर पानी अर्थात 400000 ली०

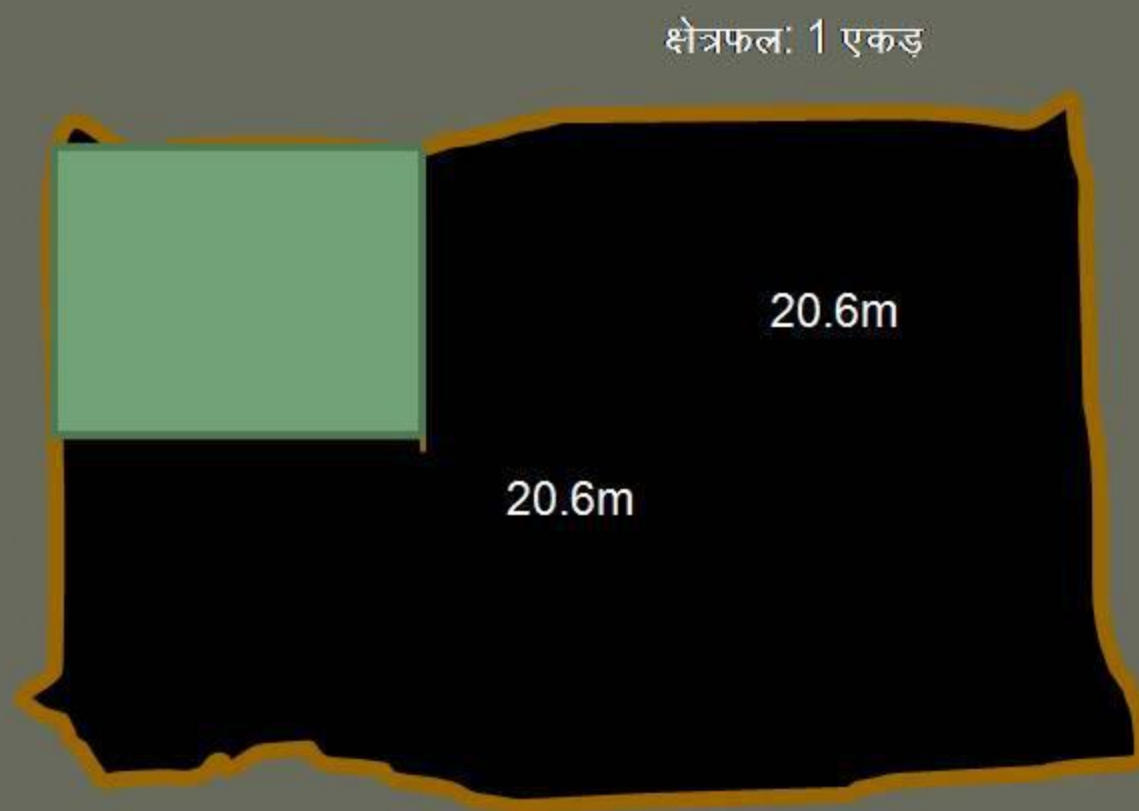
खेत में तालाब बनाने हेतु स्थल एवं आकार का चयन

- खेत तालाब सदैव खेत के साइज (माप) के $1/10$ हिस्से में बनाना चाहिये।
- खेत के ढाल के सबसे निचले किनारे पर जहां खेत का पानी बहकर एकत्र हो सके उस स्थान का चयन करना चाहिये।

जैसे गेहूँ की 1 एकड़ फसल की सिंचाई हेतु पानी की जरूरत 800 घन मीटर

(1 घन मी० = 1000 ली० अर्थात् 800000 ली०) तथा चना की 1 एकड़ फसल हेतु पानी की जरूरत 400 घन मीटर पानी 40000 ली० की आवश्यकता होती है जिसके लिये एक $20.6 \text{ मी०} \times 20.6 \text{ मी०} \times 3 \text{ मी०}$ के गड्ढे में 1002 घन मीटर पानी जमा किया जा सकता है जिससे एक एकड़ खेत की सिंचाई होती है तथा वर्षा के मौसम में दो तीन बार पानी का ठहराव होता है जिससे जल संरक्षण होता है यह साइज एक एकड़ का 10 प्रतिशत माडल है ।

एक 20.6X20.6X3 m के तालाब में 1002
घन मीटर पानी जमा किया जा सकता है



ढाल की
दिशा

तालाब कुल जमीन का 10% क्षेत्रफल जगह लेता है

खुद के खेत में लोगों ने खुद छोटा खेत तालाब कुछ इस तरह बनाया



साथ में अपने गाँव के सूखे हुये कुओं की सफाई
करके पीने लायक पानी भी निकाल लिया



इस श्रमदान के बदले प्रत्येक परिवार को काम के बदले अनाज,तेल,कपडे आदि दिये गये



सावधानियां –

- तालाब के चारों ओर मेंड बनाना चाहिये जिससे खेत की मिट्टी तालाब में बहकर न जाये ।
- तालाब में पानी जाने के लिये उचित स्थान पर पाइप या सूखे पत्थर से इनलेट अवश्य बनायें ।
- तालाब से निकली हुई मिट्टी का प्रयोग खेत की मेंड डालने एवं समतल करने पर करे अगर खेत बड़ा है तो ढाल के अनुसार खेत के भाग करके मेंड बनायें ।
- तालाब की ऊपर की सतह की मिट्टी का प्रयोग ऊसर या खराब जमीन पर डालें ।

तालाब ही क्यों –

- तालाब बनाने में लागत कम आती है ।
- इसे किसान आसानी से बना सकता है तथा अपनी आवश्यकता एवं सामर्थ्य के अनुसार बड़ा कर सकता है ।
- तालाब से निकाली गयी मिट्टी से मेडबन्धी का कार्य उसी लागत में हो जाता है ।
- किसान को अपने ही खेत में रोजगार मिलता है ।
- तीन वर्ष में तालाब की लागत वापिस आ जाती है ।
- तालाब बनाने हेतु कर्ज की आवश्यकता नहीं है ।
- तालाब से किसानों की आत्मनिर्भरता बढ़ती है तथा उन्हें जलाधिकारी बनाता है ।
- भूगर्भ के जल का दोहन नहीं होता जल के स्तर को बढ़ाता है ।

खेत तालाब से लाभ –

- खेत का पानी खेत में संरक्षित होता है।
- भूगर्भ जल का स्तर बढ़ाता है।
- नमी का संरक्षण होता है।
- खेत की उपजाऊ मिट्टी का संरक्षण होता है।
- खेत की फसल की सिंचाई कर सकते हैं।
- खेत की फसल को असमय वर्षा होने पर सड़ने से बचाता है।
- पर्यावरण सुधार तथा वातावरण की गर्मी को कम करने में सहायक है।

शेखर जी की परिकल्पना का सुखद अनुभव



विधवा देवमनी द्वारा खुद के खेत पर खुद की
मेहनत से बनाया गया तालाब ग्राम भग्गू पुरवा

